दशक 100

केशादिपादवर्णन

अग्रे पश्यामि तेजो निबिडतरकळायावलीलोभनीयम
पीयूषाप्लावितोऽहं तदनु तदुदरे दिव्यकैशोरवेषम्
तारुण्यारम्भरम्यं परमसुखरसास्वादरोमाञ्चिताङ्गै-
रावीतं नारदाद्यैर्विलसदुपनिषत्सुन्दरोमण्डलैश्च । १

अन्वयः निबिडतरकळायावलीलोभनीयम् तेजः अग्रे पश्यामि। अहम् पीयूषाप्लावितः। तदनु तदुदरे तारुण्यारम्भरम्यम्, परमसुखरसास्वादरोमाञ्चिताङ्गैः नारदाद्यैः विलसदुपनिषत्सुन्दरीमण्डलैः च आवीतम् दिव्यकैशोरवेषम् (पश्यामि)।

भावार्थः मैं अपने सामने अत्यन्त निबिड केराव-कुसुम्-समूहों के समान सुन्दर तेज देखता हूँ। (इस तेज के दर्शन से) मैं अमृतरस में डूब चुका हूँ। फिर उस तेज के मध्य में एक दिव्य बालक का रूप देखता हूँ जो यौवन के आरंभ होने से मनोहर है। उसके चारों ओर परमानन्द-रस के आस्वादन से रोमाञ्चित अङ्गोंवाले नारदादि मुनिगण तथा उपनिषद्-रूपिणी सुन्दर युवतियों के समूह घेरे हुए खडे हैं।

विवरणः उपनिषत्सुन्दरीमण्डलः उपनिषद् के दो अर्थ हैं—उपनिषद्-ग्रन्ध और समीप में बैठे हुए (स्थित)। अतः अर्थ हैं (1) उपनिषद्रूपिणी सुन्दर युवतियों का समूह—उन उपनिषदों की अधिष्ठात्री देवियाँ अथवा (2) पास बैठी हुई सुन्दरियाँ।

दूसरा अर्थ लिया जाय तो पास बैठनेवाली सुन्दर युवतियाँ व्रज की गोपवनितायें ही हो सकती हैं। कवि को कृष्ण का दर्शन बालक-रूप में, गोप-युवतियों से घिरे हुए मिलता है। उनके चारों ओर इन स्त्रियों के अलावा नारदादि मुनिगण भी हैं।

Scanned by CamScanner

जन-श्रुति के अनुसार भगवान ने भट्टतिरि को, उनके 'नारायणीयम्' स्तोत्र से प्रसन्न होकर, अपने दर्शन गर्भ-गृह में दिये थे। वे गर्भगृह के सामनेवाले मुखमण्डप पर बैठे अपना स्तोत्र रोज भगवान को सुनाया करते थे। हो सकता है कि यह मानस-साक्षात्कार हो। लेकिन वह चाक्षुष-जैसा विशद था। अतः कवि ने कहा—"अग्रे पश्यामि"—'सामने देखता हूँ'।

जो भी हो अन्तिम दशक का यह रूप-वर्णन कवि की चरितार्थता का प्रमाण है और काव्य की शुभतम् समाप्ति भी। वेदान्त-तत्व-रूप बालक कृष्ण बीच में, चारों ओर उन तत्वों के आचार्य-रूप ऋषिगण और उन तत्वों का प्रतिपादन करनेवाले उपनिषदों की देवियाँ अथवा अपना सब कुछ कृष्ण को अर्पण करनेवाली गोपवनितायें। इस दृश्य से बढकर कोई सुन्दर, गंभीर समाप्ति 'नारायणीयम्' की नहीं हो सकती।

सूचना — आगे भगवान का केशादिपाद तक के अंगों का वर्णन है।

नीलाभं कुञ्चिताग्रं घनममलतरं संयतं चारुभङ्ग्या
रत्नोत्तंसाभिरामं वलयितमुदयच्चन्द्रकैः पिञ्छजालैः
मन्दारस्रङ्निवीतं तव पृथुकबरीभारमालोकयेऽहम्
स्निग्धश्वेतोर्ध्वपुण्ड्रामपि च सुलळितां फालबालेन्दुवीथिम्। २

अन्वयः नीलाभम्, कुञ्चिताग्रम्, घनम्, अमलतरम्, चारुभङ्ग्या संयतम्, रत्नोत्तंसाभिरामम्, उदयच्चन्द्रकैः पिञ्छजालैः वलयितम्, मन्दारस्रङ्निवीतम् तव पृथुकबरीभारम् अहम् आलोकये। अपि च स्निग्धश्वेतोर्ध्वपुण्ड्राम् सुलळिताम् फालबालेन्दुवीथिम् (अहम् आलोकये)

भावार्थः मैं आप का वह निबिड केश-भार देखता हूँ जो निर्मल, काला, घुंघराले अग्रोंवाला, अत्यन्त चारुता से बन्धा हुआ, रत्न-जडित भूषणों से मनोहर, सुथरे चन्द्रकों-युत मोर पंखों से घिरा हुआ और मन्दार-पुष्पों की मालाओं से ग्रथित है।

Scanned by CamScanner

मैं देखता हूँ आप के मृदुल, श्वेत, खड़े टीकेवाले, सुन्दर उस भाल-रूप बाल-चन्द्र को भी।

विवरणः कृष्ण के केश, केशालंकार, तथा ललाट का इस श्लोक में वर्णन है।

श्वेद पुंड्र चन्दन का है।

हृद्यं पूर्णानुकम्पार्णवमृदुलहरीचञ्चलभ्रूविलासै–
रानीलस्निग्धपक्ष्मावलिपरिलसितं नेत्रयुग्मं, विभो, ते
सान्द्रच्छायं विशालारुणकमलदळाकारमामुग्धतारम्
कारुण्यालोकलीलाशिशिरितभुवनं क्षिप्यतां मय्यनाथे। ३

अन्वयः हे विभो, पूर्णानुकम्पार्णवमृदुलहरीचञ्चलभ्रूविलासैः हृद्यम्, आनीलस्निग्धपक्ष्मावलिपरिलसितम्, सान्द्रच्छायम्, विशालारुणकमलदलाकारम्, आमुग्धतारम्, कारुण्यालोकलीलाशिशिरितभुवनम् ते नेत्रयुग्मम् अनाथे मयि क्षिप्यताम्।

भावार्थः भगवन, आप मुझ अनाथ पर अपने वे नेत्र फेकें जो भरे हुए दया–समुद्र की मृदुल लहरियों के समान चञ्चल, भौंहों के विलासों से मनोहर, नील–मृदुल बरौनियों से शोभित, निबिड कान्ति से युक्त, विशाल एवं अरुण कमल–दल के आकारवाले, सुन्दर–पुतलियों–समेत, तथा करुणा–भरे अवलोकनों की लीलाओं से जगती को शीतल करनेवाले हैं।

विवरणः भगवान की आँखें हैं–रूप में कमलदल के समान सुन्दर एवं कान्तिभरी और प्रभाव में करुणाभरी तथा लोकों को शीतल करने (सुख देने) वाली।

उत्तुङ्गोल्लासिनासं, हरिमणिमुकुरप्रोल्लसद्गण्डपाळी–
व्यालोलत्कर्णपाशाञ्चितमकरमणीकुण्डलद्वन्द्वदीप्रम्
उन्मीलद्दन्तपङ्क्तिस्फुरदरुणतरच्छायबिंबाधरान्तः–
प्रीतिप्रस्यन्दिमन्दस्मितमधुरतरं वक्त्रमुद्भासतां मे। ४

अन्वयः उत्तुंगोल्लासिनासम्, हरिमणिमुकुरप्रोल्लसद्गण्डपाळी-व्यालोलत्कर्णपाशाञ्चितमकरमणीकुण्डलद्वंद्वदीप्रम्, उन्मीलद्दन्तपङ्क्ति, स्फुरदरुणतरच्छायबिम्बाधरान्तप्रीतिप्रस्यन्दि मन्दस्मितमधुरतरम्, वक्त्रम् मे उद्भासताम्।

भावार्थः आप की नाक ऊँची तथा उल्लसित, और गण्डस्थल इन्द्रनील के बने दर्पण के समान शोभित तथा कर्णाभरण के रूप में पहने दो विलोल, सुन्दर मकर-मछली की आकृतिवाले कुण्डलों से चमकीला है। आप की दन्त-पंक्तियाँ (मन्दस्मित के हेतु) बाहर थोडी-सी दिखाई पड रही है। बिंबाफल के समान अरुण तथा तरल आप के अधरोष्ठों के बीच से होकर प्रीतिजनक मन्दहास बह रहा है, जिस से आप का मुख मधुरतर बन गया है। इस प्रकार की नाक, गण्ड, दान्त अधरोष्ठ आदि अङ्गोंवाला आपका मुख मुझे स्पष्ट दीख पड जाये।

बाहुद्वन्द्वेन रत्नोज्वलवलयभृता शोणपाणिप्रवाळे-
नोपात्तां वेणुनाळीं प्रसृतनखमयूखाङ्गुलीसङ्गशाराम्
कृत्वा वक्त्रारविन्दे सुमधुरविकसद्रागमुद्भाव्यमानैः
शब्दब्रह्मामृतैस्त्वं शिशिरितभुवनैः सिञ्च मे कर्णवीथिम्। ५

अन्वयः रत्नोज्वलवलयभृता शोणपाणिप्रवाळेन बाहुद्वन्द्वेन उपात्तां प्रसृतनखमयूखाङ्गुलीसङ्गशाराम् वेणुनाळीं वक्त्रारविन्दे कृत्वा सुमधुर-विकसद्रागम् उद्भाव्यमानैः शिशिरितभुवनैः शब्दब्रह्मामृतैः त्वं मे कर्ण-वीथीम् सिञ्च।

भावार्थः आप की दोनों भुजायें प्रवाल-सम अरुण पाणियों से युक्त तथा रत्न-जडित कंकणों से अलंकृत हैं जिन से आपने बांसुरी को मुँह से लगाये पकडा है। यह बाँसुरी आप के नखों की रश्मियों से व्याप्त होने के कारण वर्णशबल हैं। आप मेरे कानों को उस से निकलनेवाले नाद-ब्रह्मामृत से सींच दें जो, अतिमधुर राग-विस्तारों द्वारा अभिव्यक्त तथा सारे भुवनों को शीतल करने (सुख देने) वाला है।

Scanned by CamScanner

विवरण: भगवान का मूरली-गान नाद-ब्रह्मामृत है जिसे सुन कर सारा ब्रह्माण्ड आनन्द विभोर हो जाता है।

उत्सर्पत्कौस्तुभश्रीततिभिररुणितं कोमळं कण्ठदेशम्
वक्षः श्रीवत्सरम्यं तरळतरसमुद्दीप्रहारप्रतानम्
नानावर्णप्रसूनावलिकिसलयिनीं वन्यमालां विलोल-
ल्लोलम्बां लम्बमानामुरसि तव तथा भावये रत्नमालाम्। ६

अन्वयः उत्सर्पत्कौस्तुभश्रीततिभिररुणितम्, कोमलम् कण्ठदेशम्, श्रीवत्सरम्यम् तरळतरसमुद्दीप्रहारप्रतानम् वक्षः, नानावर्णप्रसूनावलिकि- सलयिनीम् विलोलल्लोलम्बाम् तव उरसि लम्बमानाम् वन्यमालाम् तथा रत्नमालाम् भावये।

भावार्थः आप का कण्ठदेश कौस्तुभरत्न के अत्यन्त प्रसरित प्रकाश-राशि से अरुणित एवं अतीव मृदुल है। छाती श्रीवत्स से मनोहर तथा तरल, दीप्त मुक्ताहारों के समूह से अलंकृत है। अनेक वर्णों के पुष्पों तथा किसलयों से गूँथी हुई वनमाला, जिस पर भ्रमर मण्डरा रहे हैं, तथा रत्नों के हार उस पर लटक रहे हैं। आप के ऐसे अङ्गों तथा आभूषणों का मैं ध्यान करता हूँ।

विवरणः श्रीवत्स-- भगवान के वक्षस्थल पर, दाहिनी ओर पडा भृगुमुनि की लात का चिह्न (दे: दशक 89)

अङ्गे पञ्चाङ्गरागैरतिशयविकसत्सौरभाकृष्टलोकम्
लीनानेकत्रिलोकीविततिमपि कृशां बिभ्रतं मध्यवल्लीम्
शक्राश्मन्यस्ततप्तोज्वलकनकनिभं पीतचेलं दधानम्
ध्यायामो दीप्तरश्मिस्फुटमणिरशनाकिङ्किणीमण्डितं त्वाम्। ७

अन्वयः अंगे पञ्चाङ्गरागैः अतिशयविकसत्सौरभाकृष्टलोकम्, लीनानेकत्रिलोकीविततिम् अपि कृशाम् मध्यवल्लीम् बिभ्रतम्, शक्राश्म- न्यस्ततप्तोज्वलकनकनिभम् पीतचेलम दधानम्, दीप्तरश्मिस्फुटमणिरशना-- किङ्किणीमण्डितम् त्वाम् ध्यायामः।

Scanned by CamScanner

भावार्थः आप के अङ्गों पर पञ्चाङ्गराग लगा हुआ है जिसके आत्यन्तिक सौरभ से सारा विश्व आकृष्ट है। आपके उदर में अनेकों त्रिलोक समाये पडे हैं, फिर भी आप की कमर पतली है; आप इन्द्रनील पर रखे हुए तपे स्वर्ण के समान पीला कौशेय पहने हुए हैं; सुथरे चमकीले रत्नों से जडी मेखला एवं किङ्किणियों से आप भूषित हैं। ऐसे आप का मैं चिन्तन करता हूँ।

विवरणः पञ्चांगराग—कुंकुम्, अगर, कस्तूरी, गोरोचन तथा हरिचन्दन मिलाकर तैयार किया हुआ अङ्गराग।

भगवान के पेट के अन्दर अनेक ब्रह्माण्ड समाये हुए हैं, लेकिन कमर पतली है। उन ब्रह्माण्डों का भार यह पतली कमर कैसे सह सकती है? वर्णन में विरोध–मूलक आश्चर्य है।

ऊरू चारू तवोरू घनमसृणरुचौ चित्तचोरौ रमायाः
विश्वक्षोभं विशङ्क्य ध्रुवमनिशमुभौ पीतचेलावृताङ्गौ
आनम्राणां पुरस्तान्न्यसनधृतसमस्तार्थपाळीसमुद्ग–
च्छायं जानुद्वयं च क्रमपृथुलमनोज्ञे च जङ्घे निषेवे। ८

अन्वयः चारू, उरू, घनमसृणरुचौ, रमायाः चित्तचोरौ, विश्वक्षोभम् विशङ्क्य ध्रुवम् अनिशम् पीतचेलावृताङ्गौ तव उभौ ऊरू, आनम्राणाम् पुरस्तात् न्यसनधृतसमस्तार्थपाळीसमुद्गच्छायम् जानुद्वयम् च, क्रमपृथुलमनोज्ञे जङ्घे च निषेवे।

भावार्थः आप की दोनों जाँघें मोटी, सुन्दर, घनी एवं चिकनी कान्ति से युक्त तथा लक्ष्मीदेवी के मन को चुरानेवाली हैं। उन्हें देखकर सारे लोक का मन क्षुब्ध हो जाय—इस शंका से ही वे पीतवस्त्रों से हमेशा निश्चय ही आच्छादित रहती हैं। आप के घुटने नमन करनेवालों के सामने रखने के अर्थ संचित पुरुषार्थ आदि अभीष्ट वस्तुओं की डिबिया के समान शोभित हैं। आप की पिण्डलियाँ क्रम-पृथुल एवं सुन्दर हैं। मैं आप के इन अङ्गों का नमन करता हूँ।

Scanned by CamScanner

विवरण: तवोरू—तव+उरू। उरू-मोटे। चारू-मनोहर।

कृष्ण की चरण सेवा से समस्त पुरुषार्थ—सभी अभीष्ट—प्राप्त होते हैं। भक्तों के सारे इच्छित पदार्थ भगवान के घुटनों की पेटी में धरोहर-रूप मानो रखे हुए है (न्यसनम्-धरोहर; धृतम्-धारण किया हुआ) अर्थात् घुटने इन्हें रखने केलिए पेटी-जैसी हैं।

समस्तार्थपाळी-सारे अर्थों (पुरुषार्थों आदि का) समूह।

मञ्जीरं मञ्जुनादैरिव पदभजनं श्रेय इत्यालपन्तम्
पादाग्रं भ्रान्तिमज्जत्प्रणतजनमनोमन्दरोद्धारकूर्मम्
उत्तुङ्गाताम्रराजन्नखरहिमकरज्योत्स्नया चाश्रितानां
सन्तापध्वान्तहन्त्रीं ततिमनुकलये मङ्गळामङ्गुलीनाम्। ६

अन्वय: पदभजनम् श्रेय: इति मञ्जुनादै: आलपन्तम् इव मञ्जीरम्, भ्रान्तिमज्जत् प्रणतजनमनोमन्दरोद्धारकूर्मम् पादाग्रम्, उत्तुङ्गाताम्रराजन्नखरहिमकरज्योत्स्नया आश्रितानाम् सन्तापध्वान्तहन्त्रीम् मङ्गळाम् अङ्गुलीनाम् ततिम् च अनुकलये।

भावार्थ: आप के नूपुर अपने मधुरनाद से मानों कह रहे हैं कि आप के चरणों का भजन श्रेयस्कर हैं। माया के भ्रमों में डूबते हुए भक्तों के मन–रूप मन्दर को ऊपर उठानेवाला कछुआ है आप का पादाग्र। आप की मंगल–दायिनी उँगलियाँ अपने (मध्य में) ऊँचे, अरुण, एवं शोभित नख–रूप चन्द्र की कान्ति (चान्दनी) से आश्रित भक्तों के दुखान्धकार को दूर करती है। मैं आप के उन मंजीरों, पादाग्रों एवं उँगलियों के समूह का ध्यान करता हूँ।

विवरण: पादाग्र के वर्णन में अमृतमथन एवं कूर्मावतार की कथा का उल्लेख है। भक्तों का मन ही मन्दर–पर्वत है और पादाग्र कछुआ है। जब भक्तों का मन माया के भ्रमों में डूब जाता है तब भगवान के पादाग्रों का भजन ही उद्धार का एक मात्र साधन है। भगवान के चरण मोक्षदायी हैं और नख–रूप चन्द्र की ज्योत्सना आश्रितों के सभी सन्तापों को दूर करती है।

Scanned by CamScanner

सूर्य द्वारा अन्धकार के दूर किये जाने की बात प्रसिद्ध है। भगवान की नख-कान्ति को चान्दनी बताया है जिस से उस की सुखद शीतलता प्रकट होती है। अन्ततोगत्वा चान्दनी भी अन्धेरे को थोडा-बहुत दूर कर देती हैं।

इस श्लोक की 'उँगलियाँ' पाद की है। हाथ की उँगलियों की नख-शोभा का वर्णन पाँचवें-श्लोक में, वेणुवर्णन के सिलसिले में देख सकते हैं यथा— "प्रसृतनखमयूखाङ्गुलीसङ्गशाराम् वेणुनालीम्"।

योगीन्द्राणां त्वदङ्गेष्वधिकसुमधुरं मुक्तिभाजां निवासो
भक्तानां कामवर्षद्युतरुकिसलयं नाथ, ते पादमूलम्
नित्यं चित्तस्थितं मे पवनपुरपते, कृष्ण, कारुण्यसिन्धो
हृत्वा निश्शेषतापान् प्रदिशतु परमानन्दसन्दोहलक्ष्मीम्। १०

अन्वयः योगीन्द्राणाम् त्वदङ्गेषु अधिकसुमधुरम्, मुक्तिभाजाम् निवासः, भक्तानाम् कामवर्षद्वितरुकिसलयम् ते पादमूलम् नित्यम् मे चित्तस्थितम्, नाथ, पवनपुरपते, कृष्ण, कारुण्यसिन्धो, निःशेषतापान् हृत्वा, परमानन्दसन्दोहलक्ष्मीम् प्रदिशतु।

भावार्थः हे नाथ, आप का पादमूल महायोगियों केलिये, आपके शेष सभी अङ्गों से मधुर है; मोक्ष-प्राप्त लोगों का निवास स्थान है और भक्तों केलिये अभीष्ट बरसाने वाले कल्पवृक्ष की कोंपल है। हे करुणासागर, गुरुवायुपुरेश कृष्ण, आप का वह पादमूल मेरे मन में सदा रहकर मेरे सारे तापों को दूर करे और परमानन्द समूह की संपत्ति मुझे दे दे।

विवरणः योगीजन भगवान के अङ्गों में से चरणों का ही ध्यान करते हैं। मोक्ष-प्राप्त लोग भगवान के चरणों के पास रहकर उनकी सेवा करते हैं। मुमुक्षु और मुक्त की बात रह जाय। भक्तों केलिये वह क्या करता है? उनकेलिये वह कल्पवृक्ष के समान सकलाभीष्टदायी है कवि की प्रार्थना है कि वे भगवान के चरणों के

Scanned by CamScanner

ध्यान से अपने मन को कभी विरत न करें और फलतः उन्हें ताप-शान्ति एवं परमानन्द लाभ दोनों मिलें।

अज्ञात्वा ते महत्वं यदिह निगदितं, विश्वनाथ क्षमेथाः
स्त्रोत्रश्चैतत् सहस्रोत्तरमधिकतरं त्वत्प्रसादाय भूयात्
द्वेधा नारायणीयं श्रुतिषु च जनुषा स्तुत्यतावर्णनेन
स्फीतं लीलावतारैरिदमिह कुरुतां आयुरारोग्यसौख्यम्। ११

अन्वयः विश्वनाथ, ते महत्वम् अज्ञात्वा इह यत् निगदितम् (तत्) क्षमेथाः। सहस्रोत्तरम् एतत् स्तोत्रम् च अधिकतरम् त्वत्प्रसादाय भूयात्। द्वेधा नारायणीयम्, श्रुतिषु जनुषा स्तुत्यतावर्णनेन लीलावतारैः स्फीतम् च इदम् इह आयुरारोग्यसौख्यम् कुरुताम्।

भावार्थः हे विश्वनाथ, आप के माहात्म्य को बिना जाने, मैं ने यहाँ जो कुछ कहा हो उसे क्षमा करें। यह स्तोत्र-ग्रन्थ, जिस में एक हज़ार से अधिक श्लोक हैं, आप के प्रचुर अनुग्रह का पात्र हो जाय। यह ग्रन्थ दोनों प्रकारों से नारायणीय हैं — नारायण द्वारा रचित तथा नारायण से संबद्ध, नारायण के चरित का वर्णन करनेवाला। वेदों में कहा गया है कि आप अवतारों के वर्णन द्वारा स्तुति-योग्य है। अर्थात्, आप के अवतारों के वर्णन द्वारा आप की स्तुति करनी चाहिए। यह स्तोत्र-ग्रन्थ आप की लीलावतारों के वर्णन से पुष्ट है। यह हम सब को दीर्घायु, स्वास्थ्य एवं सुख प्रदान करें।

विवरणः श्रुतिषु जनुषा स्तुत्यतावर्णनेन—देखें दशक 99. 3

इस श्लोक के प्रथम पाद में कवि की विनम्रता द्रष्टव्य है।

'आयुरारोग्यसौख्यम्' द्वारा कवि रचना-समाप्ति का दिन सूचित करते हैं (कलिदिन की गणना पद्धति द्वारा जो केरल में प्रचलित है — देखें परिशिष्ट — कलिवर्ष की गणना)। नारायणीयम् की रचना समाप्त हुई कोल्लवर्ष (केरलाब्द) 762 में, मास वृश्चिक, तिथि अठाईसवीं, वार

Scanned by CamScanner

रविवार, नक्षत्र स्वाती, पक्ष कृष्णपक्ष-द्वादशि। यह कोल्लवर्ष शकाब्द से 747 वर्ष और ईसाई वर्ष से 825 वर्ष पीछे है।

[चालू केरलाब्द 1170; शकाब्द 1916 और ईसाई वर्ष 1994 है]।

Scanned by CamScanner